कल **03/07/2019** को **Scientific & Polemic Society** द्वारा शिमला के संजौली कॉलेज में युवाओं में बढ़ रही आत्महत्या और नशे कीप्रवृत्ति: कारण और समाधान विषय पर एक विचार चर्चा का आयोजन किया गया। कई सरकारी और गैर सरकारी संगठनों द्वारा जारी कीगयी रिपोर्टों के अनुसार भारत में पूरे विश्व में सबसे ज़्यादा लोग आत्महत्या करते हैं। इनमें से ज़्यादातर लोगों की उम्र 15-39 वर्ष के बीचकी होती हैं। नौजवानों और खासकर छात्रों में लगातार बढ़ रही आत्महत्या की घटनाओं के लिए मुख्य रूप से हमारी निकम्मी शिक्षाव्यवस्था ज़िम्मेदार है, जहाँ परीक्षा में ज़्यादा अंक लाना ही किसी विद्यार्थी की क्षमता को मापने का एकमात्र पैमाना हैं। माता पिता द्वाराअपने बच्चों पर अच्छे अंकों के साथ परीक्षा उत्तीर्ण करने के दबाव ने उनसे उनका बचपन छीन लिया हैं। जो नौजवान अच्छे नंबर नहीं लापाते हैं या फिर फेल हो जाते हैं वह हीन भावना का शिकार हो निराशा के अंधेरें भंवर में फंस कर रह जाते हैं। हर साल बाहरवीं कक्षा के नतीजेंआने के पश्चात देश के कई राज्यों से छात्रों की आत्महत्या की खबरें आती हैं। परन्तु, यह खबरें सफलता के जश्न के बीच कही दबकर रहजाती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में जारी निजीकरण की प्रक्रिया, और लगातार बढ़ रही बेरोज़गारी भी हमारे नौजवानों को मौत की अँधेरी खाई कीतरफ धकेल रही हैं। समस्या के कारणों की सही समझ न होने के कारण आज ज़्यादातर नौजवानों में गहरी निराशा व्याप्त है, जिसकीपरिणिति अक्सर आत्महत्या के रुप में देखने को मिलती है। इसलिए आज निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था को लागू करवाने और उचितरोजगार के अवसर प्रदान करने जैसी मांगों के इर्द-गिर्द नौजवानों को संगठित किये जाने की आवश्यकता है। इसी के साथ-साथ बच्चों औरनौजवानों को नशे के चंगुल में फंसने से बचाने के लिए हर गली मुहल्लें में जनता के सहयोग से चलने वाले खेल-कूद क्लब, पुस्तकालय, औरफिल्म कल्ब खोले जाने की भी सख्त आवश्यकता है। आगे चीन में क्रांति पश्चात नशे के खात्मे को लेकर उठाये गए विभिन्न कदमों के बारे में भी चर्चा की गई। अपनी बात रखते हुए Scientif &Polemic Society के President Dr. Sandeep Chauhan ने कहा कि 3 साल के भीतर ही चीन में नशे की समस्या का खात्मा करदिया गया था, जिसके लिए सरकार ने कई अहम कदम उठाए थे जैसे 1) समाचार पत्रों और रेडियो में नशे को पुराने समाज के एकविनाशकारी तत्व के रूप में चित्रित करते हुए लोगों को नशे के खिलाफ़ लामबंद किया गया। 2) किसानों से आग्रह किया गया है कि वहअफीम की खेती बंद कर दें तथा उसकी जगह गेहूं व धान की खेती करे। 3) अर्थव्यवस्था के विकास ने सभी को रोज़गार के अवसर उपलब्धकरवाये, जिसने ग़रीबी व अन्य समस्याओं का खात्मा संभव बना दिया, जिसके चलते पहले लोग नशे के व्यापार में संलिप्त होने के लिएमजबूर होते थे।